काव्य संग्रह

हृदय चक्षु

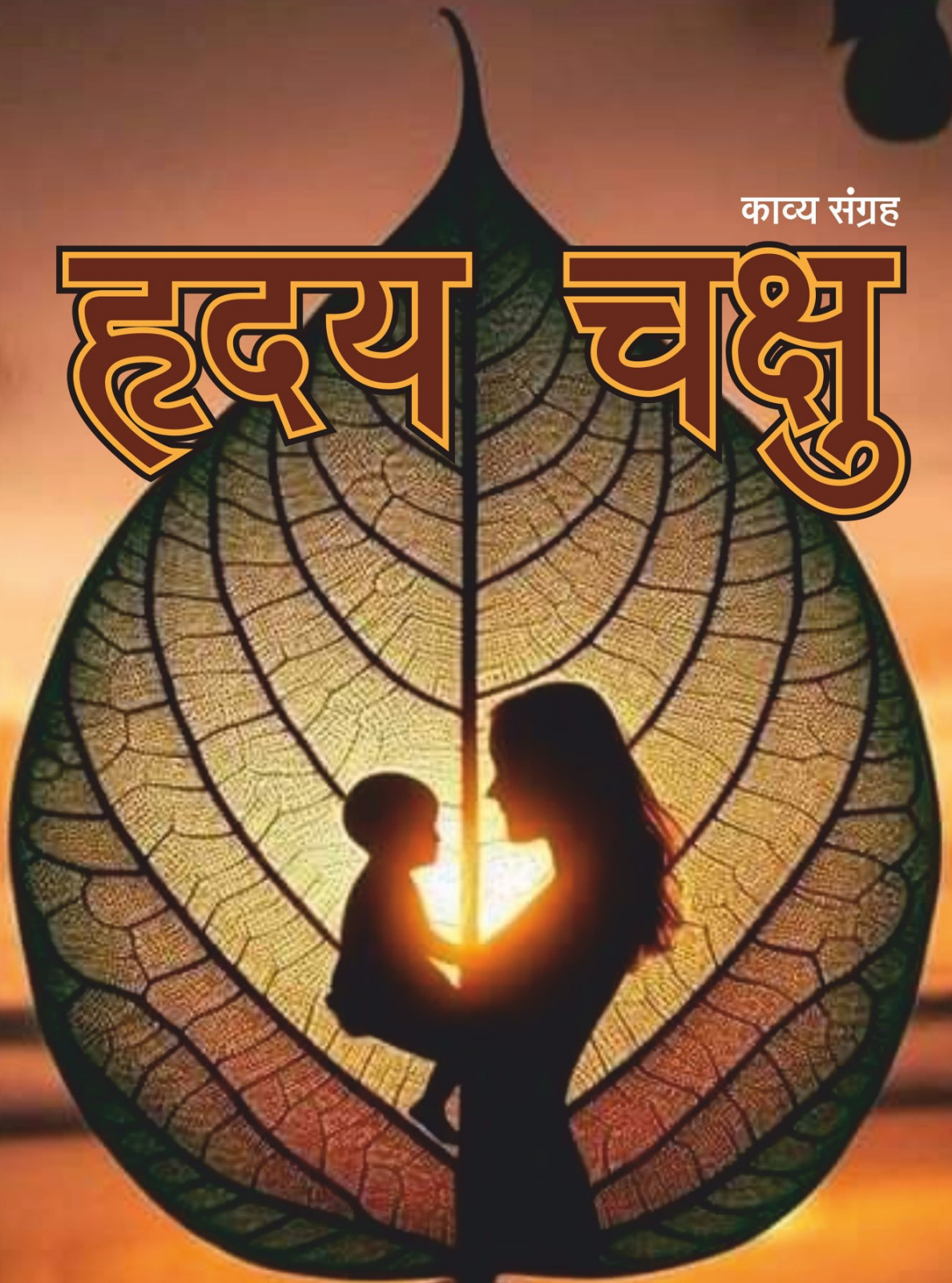

सीता गुप्ता

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

हृदय चक्षु

सीता गुप्ता

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश 481331

978-93-94528-22-2

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल-9009423393
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2026, **सीता गुप्ता**
मूल्य- 200/- रूपये
मुद्रक– सोनी प्रिंटकॉम, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY SITA GUPTA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

सांसारिक जगत के धरातल पर जीवन पटल के इर्द-गिर्द अवनि से अंबर तक जीवित- अजीवित न जाने कितने परिदृश्य कभी-कभी अचानक ही हृदय में पहुँच अंतर्मन की गहराई में तीव्रता से उथल-पुथल मचाने लगते हैं, तब ऐसी स्थिति में मस्तिष्क में उठता शोर उस दृश्य को उस एहसास की छुअन को शब्दों में बाँधने लगता है और तब..

उस स्थिति में एक कविता निर्मित हो जाती है। वह कविता उस दृश्य को रूप देते हुए पूर्णता की ओर बढ़ती हुई मन मस्तिष्क को शांत करती है। ऐसी स्थिति मेरे साथ अनेक बार बनती है, जब कोई विषय, दृश्य, कोई घटना, सुनी-देखी या पढ़ी दास्तां मेरे कवि-लेखक मन को छूती हुई लेखनी में बंधती चली जाती है और एक कविता का रूप पाकर संसार के सम्मुख आने को उतावली हो जाती है।

ऐसी ही कविताएं आपके सम्मुख इस पुस्तक हृदय चक्षु में है जो आप पाठकों के अंतर्मन को अवश्य स्पर्श करते हुए चिंतन मनन करने के लिए विवश करेंगी। साथ ही मेरी लेखनी को गति प्रदान करेंगी।

आपका प्यार-स्नेह, ममत्व एवं आशीष यूँ ही मुझे मिलता रहे जिससे मेरी लेखनी सफल होते हुए गतिवान बनी रहे।

इसी आकांक्षा के साथ..... आपकी अपनी

✍ **सीता गुप्ता** दुर्ग छत्तीसगढ़

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पेज नं.
1.	मनमोहन देते मुस्कान	5
2.	रिश्तों की दुनिया	6
3.	बोले कलश	7
4.	खिसकते पल	8
5.	यादों की गुल्लक	9
6.	अनमोल धरोहर	10
7.	सपने प्रहरी के	11
8.	करो स्वीकार	12
9.	याराना	13
10.	मैं मिठास बनूँगी	14-15
11.	सबसे अच्छे मेरे पापा	16
12.	हे दिनकर!	17-18
13.	एहसास हूँ मैं	19
14.	चुटकी संग संसार	20
15.	बेटी एक आलोक	21
16.	खुशियों से संसार	22
17.	प्रीतम मेरे	23
18.	होता है फासला	24
19.	जादुई तूलिका	25
20.	इंसानी रुप आराध्य	26
21.	कृत्रिम फूल	27
22.	विश्वास की डगर	28
23.	जरूरी कदम	29
24.	वेग भाव का	30
25.	सफल हो जीवन	31-32

मनमोहन देते मुस्कान

यशोदा नंदन कन्हैया में,
कुछ तो बात है!
तभी तो घर -घर के मंदिर में,
कान्हा का अपना स्थान है।
जिनकी टेढ़ी चितवन के असर से!
हमारे जीवन में सीधी मुस्कान है।

लगता है मुरारी को छप्पन भोग,
केवल दिवाली के दूसरे दिन,
लेकिन गोवर्धन गिरधारी,
देते हैं नित दिन हम सबको,
छप्पन भोग का स्वाद सा प्रसाद।
क्योंकि मदन मुरारी में!
कुछ तो बात है।

हो न जाए बेरंगी दुनिया,
इस बात का कान्हा को ख्याल है।
तभी तो होली के बहाने,
धरा पर सजती गुलाल है।
क्योंकि रासबिहारी में!
कुछ तो बात है।

रिश्तों की दुनिया

वही रिश्ते होते हैं सुंदर!
जो दिल से निभाए जाते हैं।
भले रहें मीलों दूरी पर,
पर.. एहसास पास का देते हैं।

रिश्तों की सुंदर बगिया में,
सब स्नेह की पौध लगाते हैं।
दुआओं का सिंचन देकर,
खुशियों के सुमन खिलाते हैं।

अपनापन दे करके अपना,
वह अपनत्व निभाते हैं।
सुख-दुख को साझा कर करके,
पल की खबर वो रखते हैं।

एक-दूजे के सपने बुनकर,
हौसले उड़ान वो देते हैं।
वक्त सही जब पकड़ में आता,
कदमों की मंजिल बनते हैं।

रिश्तों की सुंदर दुनिया संग,
जो जीवन को जीते हैं।
मानव वो मानव बन करके,
कृपा ईश की पाते हैं।

ईश कृपा जब संग में होती,
रिश्तों की महफिल सजती है।
हँसी ठिठोली देख मुस्कुराहट,
धरा भी खुश हो जाती है।

बोले कलश

मैं माटी की शान हूँ,
मैं धरती माँ की आन हूँ ।
आए जो शुभ घड़ी कभी जब,
मैं कलश रूप महान हूँ ।

भरो जो निर्मल जल मुझमें तुम!
अधरों की मुस्कान हूँ ।
थके पथिक को जो मिल जाऊँ,
जीवन धन्य समान हूँ ।

अपने कलाकार की मैं तो,
सुंदरतम पहचान हूँ ।
गढ़ता है जो मुझको रुचिकर,
नतमस्तक अविराम हूँ ।

मैं गरीब की कुटिया का धन,
सीमित संपत्ति का साधन ।
तीज -त्यौहार जो आते रहते,
बन जाता मैं बहुत का साधन ।

अक्षय तीज और नौ रात्रि पर,
मान मुझे मिलता है जी भर ।
मैं कुम्हार की माटी का धन,
सदियों से मैं उसका जीवन ।

प्यासे कौए की कहानी,
संग उसके पहचान हूँ ।
नौनिहाल जब ध्यान से सुनते,
करता मैं अभिमान हूँ ।

खिसकते पल

ढलती सांझ के धुंधले से,
सुनहरे पल में ।
रेत से खेलता बच्चा,
बन गया जैसे जगत गुरु!
समय की पहचान बताने को,
अनमोल समय के,
मोल के प्रति सजग करने को ।
मुठ्ठी से रेत गिराता हुआ ,
समझा रहा वह !
पल-पल खिसकता समय भी,
यूँ ही फिसलता है रेत की मानिंद ।
तो फिर.....
सजग हो जाओ मिली साँसों के प्रति!
चलो अपने सुंदर कदमों संग,
प्रतिपल बढ़ आगे ।
क्योंकि बीतेगा.....
मुस्कुराता बचपन, उछाल लेता यौवन ।
कर्तव्य के बोझ से लदा प्रौढ़पन ,
और फिर.. पल-पल,
कंधों को उठाने की नाकाम कोशिश करता !
क्षण-क्षण छूता बुढ़ापा ।
इस सिमटते धुंध की तरह ,
जहाँ चिपकी होगी अंगुलियों के बीच,
छुपी रेत की तरह !
सुख -दुःख की परिभाषा ।
तो.....
सांझ सी जिंदगी ढल जाए, एकदम से ...
उसके पहले करलो पूर्ण तैयारी ।
ताकि हमारे बाद भी!
व्यक्तित्व चमकता रहे,
सुनहरे दिवस सा।

यादों की गुल्लक

सर्दी की धूप देखते ही,
मन यादों की गुल्लक खोलने लगता है।

मायके की दहलीज संग,
वो बाड़ा वो आँगन याद आता है।

बैठते थे सखी- सहेलियों संग जहां,
खाते थे खट्टे- मीठे बेर।

अमरूद और आँवले,
मसालेदार नमक के साथ।

बन जाते थे ऊन के गोले,
समय की होड़ लगाकर।

बनते थे मिलकर सब घरों के,
बड़ी बिजौरी और पापड़।

एक दूजे के सौहार्द से,
सब काम पूरे होते थे।

हँसी ठिठोली संग,
बड़े काम भी मिनटों में होते थे।

बैठते थे जब संग में,
सुख-दुख भी साझा होते थे।

अपनत्व के रंगों के संग।
खुशी से जीवन जीते थे।

अनमोल धरोहर

अलमारी में रखे पुराने खत!
अनमोल धरोहर होते हैं ।
जो समय- समय पर मुस्कुराकर,
नए दीप से रोशन होते हैं।

साजन के उस मनुहार संग,
सजनी को प्राणरस देते हैं।
वृद्धापन की लाठी बनकर ,
एक दूजे को संबल देते हैं।

उन दादा-दादी की सीख को,
पोती पोतों को याद दिलाते हैं।
संस्कार के रोपे बीज वो,
फलदार वृक्ष अब दिखते हैं।

जो सखा- मीत अब दूर कहीं,
शब्दो के संग मुस्काते हैं ।
हर होंठ पर हँसी की थिरकन दे,
वो मीठी याद दिलाते हैं।

जीवन की आपाधापी में,
ख़त संजीवनी सी बन जाते हैं।
जो यदि उदासी छाए तो,
वो राग प्रीत की गाते हैं।

अलमारी में रखे पुराने खत!
एक नई कहानी देते हैं।
हर मोड़ के वो तो प्रहरी से,
खुशियों को सुरक्षित रखते हैं।

सपने प्रहरी के

दूर तक सन्नाटे का!
पसरा हुआ वह प्रहर।
जब खामोश होने लगती हैं,
वह आस-पास की वादियाँ।
तब ऐसे ही समय में,
सीमा रक्षक सैनिक की तन्हाई!
मिटाती है हवाएं!!
ले जाती है उसे सपने दिखाती,
उसके गाँव की दहलीज पर।
तब आने लगती है उसे,
गाँव की माटी की महक।
माँ के हाथ की रोटी की,
वो सौंधी-सौंधी खुशबू।
संग प्रिया की उड़ती जुल्फों का,
खुद के चेहरे पर लिपटा एहसास।
तब दूर बहुत दूर.....
उस तन्हाई को भूल।
वो वतन का प्रहरी!!!!!
खो जाता है सुखद मीठे सपनों में, और .....
सोचने लगता है, अब की बार.....
जरूर लगाऊँगा माथे पर,
प्यारे गाँव की माटी का फिर तिलक।
खाऊँगा माँ के साथ मिलकर,
वो सौंधी-सौंधी रोटी।
बाँधूगा प्रिया की जुल्फों को,
अपने हाथों से लपेटकर जूड़ा।
और लगा दूँगा उस पर.....
एक खुशबूदार गजरा !!!!

करो स्वीकार

रहो स्वीकारता संग संसार,
उनको अपने-अपने वजूद संग रहने दो।
स्त्री सीता ही क्यों?
बुद्ध क्यों नहीं!
मतभेद को मतभेद के,
परदे में ही छुपा रहने दो।
क्योंकि....
सीता रूप नारी !
संरक्षिका है मर्यादा की,
कर्तव्य निर्वहन की धुरी सी।
नहीं विमुख हो सकती,
सांसारिक बंधन से।
अपनी इच्छाओं का त्याग,
भले कर दे वो!
पर अपनों को नहीं छोड़ सकती वो।
बुद्ध तो बुद्ध ही हैं धरा पर,
संयम-शुचिता की परिभाषा हैं वो!
बुद्धत्व से संसार बचा भटकाव से,
अंतर्मन के वेग कलुषिता से।
बुद्ध आसमां की ऊंचाई से,
उनके उपदेश सागर की गहराई से।
स्त्री सहनशीलता में वसुंधरा सी,
दोनों का वजूद अलग-अलग है।
इसलिए स्त्री को सम्मानित स्त्री!
बुद्ध को बुद्धत्व रूप रहने दो।

याराना

बड़े ही नसीब वाले होते हैं वह!
जिनके सदमित्र हुआ करते हैं।
हँसी-ठिठोली संग वे ही,
मुसीबत में भी साथ दिया करते हैं ।
नहीं कह पाते अधर जो बात!
कई बार बहुत अपने से ।
पर गहरे मित्र से वो बात भी,
साझा कर लिया करते हैं ।
क्योंकि वहाँ !!!!
भरोसा और प्यार !
संजीवनी बूटी जैसा होता है।
जो.....
बहुत गहरे से अपनत्व का,
एहसास सदा देता है।
इस तरह जिनके दोस्त,
बचपन से बुढ़ापा तक,
नजदीक रहा करते हैं ।
वह खुशनसीब हुआ करते हैं।
वही तो सांसारिक जगत में,
मित्रता को जीवित रखते हैं।
वरना बेदर्द ज़माना तो!!!!!!
पग-पग पर ठोकर देता है ।
पर सच्चा यार ही तो,
बढ़ आगे संभाल लेता है ।
इसीलिए!!
ऐसे याराना से ही तो
ये दुनिया सलामत है।

मैं मिठास बनूंगी

क्या कहती है सागर की लहर,
वह मनुज है मन में सोचे,
क्यों उछाल ले रहा जलधि ये!
तट खड़ा मनुज वह सोचे।

क्या संताप है हृदय उदधि के,
क्यों नहीं बतलाता।
नदियाँ मीठा नीर इसे देतीं!
यह खारा क्यों हो जाता??

एक दिन उदास होता जब मानव,
स्वयं ही उत्तर पाता।
अपने अश्रु के खारेपन को।
एहसास स्वयं ही करता।

मन मस्तिष्क तब बातें करके,
उसको है समझाता।
मीठा जल तुम भी तो पीते,
पर अश्रु तो खारा होता।

यूँ ही उदधि के उर में मानव,
लाखों दुख पड़े हुए हैं।
इस जग की सारी नदियों के,
संताप समाहित जो हैं।

सारे पाप और गंदगी मानव!
नदियों में ही धोता।
उन नदियों का जल आखिर में,
सागर में ही जाता।

सागर की लहरें कहती हैं,
अब मैं मिठास बनूँगी।
नीर भरी बदली बन करके।
फिर धरा को वर्षा दूंगी

वर्षा के जल रूप में तब मैं!
हँस-हँस खूब बहूँगी।
घर-घर गगरी में पहुँचकर,
अधरों मुस्कान मैं दूँगी।

सबसे अच्छे मेरे पापा

अंगुली पकड़ अपने पापा की,
चलना मैंने सीखा।

अनुशासन से रहना आया,
यह भी उनसे सीखा।

बड़ों का आदर सीख सयानी,
ग्रहण करना भी सीखा।

पतझड़ सावन जीवन के रूप,
धैर्य उन्हीं से सीखा।

जीवन पथ पर सुमन- कांटे की,
स्वीकारता को सीखा।

कर्तव्य बोध संग परिवार सुरक्षा,
पाठ उन्हीं से सीखा।

समय की कीमत लक्ष्य निर्धारण,
मंजिल को पाना सीखा।

जीवन के परिवेश समझना,
गतिविधियों को सीखा।

जीवन पथ जो सुगम हुआ है,
मेरे पापा के कारण।

सबसे अच्छे मेरे पापा हैं!
हर पल ही ये माना।

हे दिनकर!

दूर फलक पर,
गहराती लालिमा लिए,
अस्ताचल गामी सूरज से बोला नन्हा पौधा।
जो था टीले पर अपनी दो पत्तियों के साथ,
सूर्य मत हो उदास!
जगत को तुम ही देते प्रकाश।
अभी तुम जो जा रहे हो,
छुपते से नीचे।
मैं दिख रहा हूँ फिलहाल, तुमसे ऊपर!
ये केवल एक भ्रम है...
इस सारे जगत में उठता है,
ऊपर ही ऊपर जो जीवन!
वह केवल आपकी तपिश का असर है।
ना मिले आपकी तपन,
जो संसार को!
तो सारा जगत तड़प जाएगा,
अपनी क्षुधा मिटाने को।
नहीं पकेंगी फसल की डालियाँ,
ना ही महक सकेंगी ,
वो केसर की क्यारियाँ।
हे भास्कर!
यह सब तुम्हारा ही प्यार है,

जो संसार में इतनी रौनक है।

तुम तो जाते हो सूर्यास्त के रूप में,

सिर्फ इसलिए कि....

सबको नई ऊर्जा देने,

तुम्हें कल फिर आना है।

इस संसार की सृष्टि को,

कल फिर से जो चमकाना है।

करूँगा इंतजार मैं,

रवि तुम्हारा!

यूँ हीं खड़ा रहकर रात भर,

आओगे ना शीघ्र ही प्राची में,

कल जल्दी ही हे दिनकर!

एहसास हूँ मैं

तेरी सुख-दुख की अनुभूतियों का,
हिसाब रखता एहसास हूँ मैं!
तेरे प्रभावी कर्मों को देख,
साथ चलता लेखापाल हूँ मैं।

सुर्ख स्याह अंधेरे में भी,
आस की ज्योति दिखाता मैं।
तेरे सत्कर्मों को गिनता,
भीतर बैठा है एहसास हूँ मैं।

खता न हो जाए तुझसे कहीं भी,
पग-पग संभाल रहा हूँ मैं।
अपना सा तू प्यारा लागे,
मददगार एहसास हूँ मैं।

तेरे दामन ना काँटे आएं,
तुझे सुरक्षित करता मैं।
तेरी नेकी के हिसाब देखकर,
सचेत करता एहसास हूँ मैं ।

तेरी दुनिया रहे सलामत,
यही चाहता हरदम मैं।
तेरी बगिया सुरभित रहे सदा,
संग चलता एहसास हूँ मैं !

चुटकी संग संसार

चुटकी भर नमक ही देता!
सारे भोजन में स्वाद।
जो ना समझे नमक की कीमत,
खुद होता वह बर्बाद।

नमक का कर्ज मत रखना सिर पर,
देता बड़ा ही बोझ।
चैन नहीं जीवन में होता,
ना संध्या ना भोर।

चुटकी का बड़ा खेल है न्यारा,
इस सारे संसार में।
एक पल की चुटकी में दिखते,
राजा-रंक इस जग में।

चुटकी बजाकर मजा मत लेना,
मत देना तुम अवसाद!
चार दिन की जिंदगी में,
कल किसको मिले प्रसाद?

चुटकी भर लोगों से चल रहा,
यह सारा संसार।
इंसा-इंसा को बाँट रहा जहाँ!
मानवता का प्रसाद।

चुटकी लेकर कहकहे लगाते,
महफिल सजाते लोग।
खुद के नयन छुपाएं आँसू ,
वही ज्यादा हँसते लोग।

चुटकी काट यारी है सजती,
जब मिलते पुराने लोग।
तनिक देर की उस घड़ी में,
भूल जाते सारे रोग।

बेटी एक आलोक

यही दस्तूर दुनिया का!
कि बिदाई बेटी की होती है।
होकर के पौध सी रोपित ,
नया संसार पाती है।

वह दिलकश उन ठहाकों को,
खुशी से छोड़ आती है।
भारी कर्तव्य की गठरी,
वह सिर पर हँस के रखती है।

चहकती थी जिस आँगन में,
उसे यादों में रखती है।
"नये संसार की देहरी"
दोनों हाथों सहेजती है।

पीहर के सारे रिश्तों को,
ससुराल में खोज लेती है।
सभी को मान दे करके,
स्वयं सम्मान पाती है।

वो बेटा कुल दीपक है ,
तो बेटी ज्योति होती है।
जो दोनों कुल की शोभा को,
सदा आलोक देती है।

खुशियों से संसार

घर अँगना किलकारी गूँजे,
सारा घर खुशियों को पाता है।

कागज की नाव जब आगे बढ़ती,
नन्हा अनुपम खुशी को पाता है।

स्कूल संग जब दोस्त हैं मिलते,
हर बच्चा खुशी को पाता है।

मन माफिक परीक्षाफल जब आता,
विद्यार्थी खुशी को पाता है।

बेटी का संसार बसे जो,
अभिभावक खुशियों को पाता है।

बहू लक्ष्मी रूप घर में आती,
हर शख्स खुशी को पाता है।

आते जब त्यौहार और उत्सव,
सारा जग खुशियों को पाता है।

खुशी छोटी हो या बड़ी खुश तो करती है।
यही छोटी बड़ी खुशी अधरों मुस्कानें देती है।

इस सांसारिक जीवन की गति,
इन खुशियों से ही बढ़ती है।

प्रीतम मेरे

नयन संग हृदय में छवि तुम्हारी!
दिल के आईने में तुम हो।
प्रीतम मेरी साँसों के संग,
तुम ही मेरे जीवन धन हो।

मेरा घर-आँगन खुशियों का,
उसके रखवाले तुम प्रिय हो।
कर्तव्य बोध के दो पलड़े हम,
उसकी संतुलित तुला तुम्हीं हो।

जीवन पथ में सुगम जो रहता,
संबल पूर्ण आधार तुम्हीं हो।
कभी जो मैं विचलित भी होती,
तूफां में पतवार तुम्हीं हो।

सांसारिक रथ पर हम दोनों,
सच्चे साथी सारथी से हो।
मंजिल जो हमें आगे मिलती,
कदम-कदम पर साथ जो तुम हो।

यह संसार भी है एक सागर,
मेरे साहिल साथ तुम्हीं हो।
हृदय में रहती छवि तुम्हारी,
दिल के आईने में तुम ही हो!

होता है फासला

सच्चे अर्थों में स्वप्न और यथार्थ में,
बड़ा ही अंतर होता है।
जैसे उषा और संध्या का!!
कभी मिलन नहीं होता है।
देखता है मानव स्वप्न,
कभी बंद तो कभी खुली आँखों से।
जो उसके वजूद को झकझोर भी देते हैं।
खुली आँख से देखे स्वप्न!!!!
कर्मठता को निमंत्रण देते हैं।
जो यथार्थ के धरातल पर,
कदमों को मजबूती देते हैं।
पर कभी-कभी कर्मठता के संग भी,
अनेक अवरोध आ जाते हैं।
जो यथार्थ की मंजिल को,
कोसों दूर कर दिया करते हैं।
जबकि बंद आँखों के स्वप्न,
यथार्थ सम मनमोहक छवि देकर,
कुछ पल की मुस्कुराहट दे देते हैं।
लेकिन.....
खुली आँखों के स्वप्न!!
यथार्थ की वास्तविक छवि की प्रस्तुति में,
मानव को वजूद के धरातल पर,
खड़ा कर दिया करते हैं।

जादुई तूलिका

हे अंबर!
सोच रही हूँ मैं! क्यूँ न आज,
अपनी जादुई तूलिका से,
तेरे मटमैले आँचल के,
बचे हुए रुपहले कोने पर ही,
थोड़ी सी हरीतिमा फैलादूँ।
जिससे.....
तेरी, विषाक्त होती हुई साँसो को!
कुछ तो बढ़ती साँसे मिल जाएं।
साथ ही तेरे आँगन में आते,
मेहनती परिंदों को,
वहाँ भी एक बसेरा मिल जाये।
क्योंकि आज.....
भोर की सुकून देने वाली पवन!
अब नहीं बह रही धरा पर।
इसलिए उदास मन से अब!
परिंदें अपनी उड़ान भरते हैं।
और दिन भर मेहनत कर,
यही सोच के साथ लौटते हैं,
कि .....
हरी डाल पर बना बसेरा,
परिवार संग हँसता मिलेगा???
कि आज मेरा बसेरा भी,
इंसानी फितरत की,
स्वार्थी कुल्हाड़ी से काटी गई!
हरी डाल संग धरा पर,
सिसकता मिलेगा!!!!!

इंसानी रूप आराध्य

यूँ तो भगवन ही,
अलग-अलग रूप में!
सबके लिए आराध्य होते हैं।
पर सांसारिक जगत में,
वह भी होते हैं आराध्य!
जो जगाते हैं मन का विश्वास।
देते हैं हौसला!
बताते हैं वक्त पकड़ने का गुण!
बनाते हैं सुगम राह,
संग में लक्ष्यों की पहचान।
मंजिल को पाने के लिए,
बनाते हैं मजबूत कदम।
डगमगाने से पहले!!!!
थामते हैं जो बांह।
तब आती है अधरों मुस्कान,
मिलती है मंजिलें।
ऐसा ही व्यक्तित्व!
बन जाता है आराध्य।
जो मन से पूजित होता है।
इसीलिए.....
मेरे जीवन में भी..
हमारे आराध्य वह भी हैं,
जो वक्त की जरूरत पर,
संभालते थे मुझको।
साथ ही दिए एक पहचान एक नाम।
ईश्वर कृपा संग, इंसानी रूप में
वह भी हैं हमारे आराध्य!

कृत्रिम फूल

नमन करो उन कलाकारों को!
जो कृत्रिम फूल बनाते हैं।
प्रकृति की रौनक के जैसे,
घर- सभागार सजाते हैं।

मुरझाने के अनजाने डर से,
इन फूलों को बचाते हैं।
एक-एक पंखुड़ी में वो तो फिर,
सजीव रूप सा देते हैं।

हो त्यौहार या कोई उत्सव,
कृत्रिम फूल भी दिखते हैं।
सुंदर सजीली सजावट में,
अपना सहयोग वो देते हैं।

अपने सुंदर रूप में हरदम,
कृत्रिम फूल लुभाते हैं।
प्रकृति के प्रतिरूप से बनकर,
एक अनोखी शान ये पाते हैं।

वो कृत्रिम फूल बहुत दिन,
जब सही स्थान को पाते हैं।
जन-मानस का दिल हर्षाकर,
कलाकार का मान बढ़ाते हैं।

विश्वास की डगर

कर परवाह तू खुद की मानव,
जीवन सफल बनाने को।
स्व विवेक संग कदम बढ़ा ले,
मंजिल अपनी पाने को।

क्यों? उदास तू बैठा मानव!
चिंता कौन सी मन में?
पर... जो गलती लगे न तुझको ,
शांत भाव ला मन में ।

अवरोध-गतिरोध तो आते,
जीवन की डगर में ।
समझदार उन्हें पार है करता,
हर हालत उस क्षण में ।

कोमल डाली टूट लटकती,
लगता है वह सूखी ।
लेकिन... अंतसरस को खींच-खींच,
वह डाल तो जीवित होती ।

प्रकृति सीख देती है मानव,
ध्यान से यदि तू देखे ।
पग-पग पर और डगर-डगर पर,
नए-नए दृश्य को देके ।

हम प्राणी अनदेखा करते,
जो संकेत न समझें ।
प्रभु कृपा की आए घड़ी जब,
समय पर हम न पकड़ें ।

वक्त के साथ सम्हल जा प्राणी,
सही चिंतन को करके ।
अभी इसी पल कदम बढ़ादे,
सारी शक्ति लगाके ।

जरूरी कदम

नया रूप पाने को लोहा,
प्रतिरूप की चोट ही सहता है।
छेनी हथौड़ी भी परिवार उसी के,
लगता वक्त का धोखा है।

जैसे हीरे को तरासने,
हीरा ही काट लगाता है।
सुंदर रूप सृजित पाने को,
कोरों अश्रु पीता है।

चाक पर रखने माटी को ,
पहले पैरों से कुम्हार ही रौंदता है।
घड़ा वह सुंदर रूप एक पाए,
बार-बार उसे ठोंकता है।

ऐसे ही बगिया का माली,
स्व पौध को आहत करता है।
समय से पुष्पित वो हो आगे!
वह काट डगाल को देता है।

मात-पिता भी कुछ ऐसे ही,
कड़े निर्णय वक्त पर लेते हैं।
भ्रमित ना हो संतान कहीं पर,
सही राह ले आते हैं ।

यह परिभाषा सारी की सारी,
ऊपर से धोखा देती है।
लेकिन एक वक्त के संग वो,
मान सभी का पाती है।

वेग भाव का

होती हैं आँखें एक जैसी!
लेकिन अंदाजे बयां अलग होता है।
क्योंकि हर शख्सियत का हृदय,
वहाँ हाले बयां करता है।

कहीं छलकती है गागर वात्सल्य की!
तो कहीं क्रोध की लपटें उठती हैं।
कहीं फूटता है झरना प्रेम का,
तो कहीं तिरस्कार की भूमि दिखती है।

होता कहीं अपनत्व का रंग,
तो कहीं सुख बेरंग होता है।
कहीं छलकता प्याला प्रेम का!
तो कहीं घृणा का विष दिखता है।

मुस्कुराहट होती है कहीं,
तो कहीं कसक का भाव होता है।
कहीं स्वागत भाव होता है,
तो कहीं मर्माहत रंग होता है।

हैं ईश कृपा से आंखें एक,
पर इंसानी रंग बदलता है।
इस जगत की चलती चाकी में,
जो भाव अलग फिर दिखता है।

सफल हो जीवन

इंसा तुम हो किस्मत वाले!
मानव देह में प्राणी।
सद्कर्मों को करके मानव,
दे दो भागीदारी।

भूखे को रोटी देने को,
त्वरित ही तुम चले जाओ।
अंधे की लाठी बन करके,
सड़क पार करवाओ।

मन अँधेरा छा रहा हो जहाँ,
एक आस का दीप जलाओ।
देहरी पर वह दीपक रखकर,
घर-बाहर प्रकाश फैलाओ।

बिखर ना जाए घर किसी का!
कभी रक्तदान कर आओ।
रक्तदान तो महादान है,
घर-घर संदेश पहुँचाओ।

संस्कार संग नैतिकता का,
बिगुल तुम बजाओ।
लाज न लुटे कहीं किसी की,
वह पहरेदार बन जाओ।

ईर्ष्या-द्वेष तो बनते दुर्गुण,
इनसे दूरी बढ़ाओ।

घर-परिवार-समाज हो सुंदर,
मानवता फैलाओ।

जीना जरूरी या जिंदा रहना!
इस पर चिंतन जतलाओ।
आए हो सांसारिक जग में,
मनुज सफल हो जाओ।

यह जीवन तो क्षणभंगुर है,
यह उक्ति भूल न जाओ।
यह संसार छोड़ने के पहले,
मील का पत्थर बन जाओ।

स्व की परिभाषा को लिखकर,
इतिहास स्वयं हो जाओ।
सदियाँ तुमको याद करें फिर,
ऐसा कुछ कर जाओ।

नाम - सीता गुप्ता
(सेवानिवृत वरि.शिक्षिका एन.एम.डी.सी. बैलाडीला, छत्तीसगढ़)
शिक्षा - एम.ए.(हिंदी), एम.ए.(समाज शास्त्र), बी.एड.
पति - श्री आर.के.गुप्ता
(सेवानिवृत्त कनिष्ठ अधिकारी एन.एम.डी.सी. बचेली छ.ग.)
माता - श्रीमती त्रिवेणी सरावगी
पिता - स्व. ललता प्रसाद सरावगी
पता - गणपति विहार, दुर्ग, छत्तीसगढ़
मो नं. - 08839445051
ई मेल - sitarkgupta@gmail.com

प्रकाशन - 7 एकल काव्य संग्रह, 2 एकल कहानी संग्रह, 55 साझा संकलन

सम्मान - कर्म भूमि बैलाडीला से वर्तमान तक अनेक विशेष सम्मान की प्राप्ति। देश की विभिन्न संस्थाओं में निरंतर गद्य-पद्य लेखन, ऑडियो-वीडियो कवि सम्मेलन आदि की प्रस्तुति में 5300 से अधिक डिजिटल प्रमाण पत्र की प्राप्ति हुई

विशेष - 1995 से वर्तमान तक अनेक उपलब्धियां जैसे एस.के.एम.एस.यूनियन द्वारा महिला दिवस पर विशेष सम्मान, इंदुक यूनियन द्वारा क्षेत्रीय स्तर पर बेस्ट टीचर्स अवार्ड पर्यावरण स्लोगन प्रथम पुरस्कृत बोर्ड कर्मभूमि बैलाडीला की मुख्य सड़क पर आज भी स्थापित है। वैश्विक बीमारी के समय यूट्यूब पर संदेशात्मक गीत के लिए जनमानस द्वारा प्रशंसा, अंतरा शब्दशक्ति द्वारा 2018 से वर्तमान तक अनेक सम्मान की प्राप्ति, अनेक संस्थाओं से विशिष्ट सम्मान, 2021 देश की प्रतिष्ठित कंपनी बालको (वेदांता)के हिंदी दिवस एवं पर्यावरण दिवस पर प्रथम पुरस्कार, 2022 गहोई वैश्य समाज (जबलपुर) द्वारा साहित्य शारदा अलंकरण, 2023 गहोई वैश्य समाज(दुर्ग-भिलाई) द्वारा राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त साहित्य सृजन सम्मान, इस प्रकार वर्तमान तक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुए

उद्देश्य - मानव जीवन अधिकांशत: संघर्ष की राह पर ही अग्रसित रहता है, इसलिए सकारात्मक भाव की लेखनी से मानव मन को संबल देने का प्रयास करती हूँ।

पं.क्र.(04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/
978-93-94528-22-2
मूल्य- 200/-
15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो.- 9009423393, ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com